रात्रि क्लास 4/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

यह तो बच्चे समझते हैं एक तरफ है आसुरी सम्प्रदाय और दूसरी तरफ है दैवी सम्प्रदाय। ब्राह्मण सम्प्रदाय से को समझ न सके; क्योंकि ब्राह्मण तो हैं बहुत। सतयुग में कोई असुर होता नहीं। कलियुग में फिर देवता नहीं। सिर्फ है। अभी तुम(को) कहा जावेगा ईश्वरीय सम्प्रदाय। दैवी सम्प्रदाय फिर तुम सतयुग में बनते हो। दैवी सम्प्रदाय बनने लिए तुम्हारा पुरुषार्थ है। मनुष्यों को पता नहीं है हम आसुरी सम्प्रदाय हैं। यह रावण राज्य है। मनुष्य अपन को रावण समझते थोड़े ही हैं। पत्थरबुद्धि होने कारण कुछ समझ नहीं सकते। यह बाप बैठ समझाते हैं। सतयुग-त्रेता में वज़ीर, गुरु-गुसाई आदि कोई नहीं होते। द्वापर से शुरू होते हैं। राजा-रानी, एक वज़ीर होता है। अभी तो ढेर वज़ीर हैं। जट लोग हैं तो राय देने वाला चाहिए। तो राय देने वाला समझू, लेने वाले मूर्ख ठहरे ना। परन्तु इन बातों को कोई समझते नहीं। आसुरी सम्प्रदाय में 5 विकार तो होते ही हैं। बाप आकर निर्विकारी बनने की युक्ति बताते हैं। जन्म-जन्मांतर के पापों का बोझा सिर है, वह कैसे उतरे, सो कोई नहीं जानते। गुरु-गुसाई सम्पूर्ण निर्वि॰ बनने का बता भी न सके। यह पुरु॰ बाप ही कराते हैं। यह अन्तिम जन्म पवित्र बन पवित्र दुनिया में जाना है। यह अपवित्र दुनिया खत्म होनी है। अपन को आत्मा समझो। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते-2 मेरे पास आकर पहुँचेंगे। इसको कहा जाता है यात्रा। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया यह भी यात्रा हो गई। पुनर्जन्म तो सभी का होता रहता है। प्रर्द॰ में यही समझाना चाहिए, पतित-पावन बाप कहते हैं मुझे याद करो। यह मुख्य बात समझाना ही बच्चे भूल जाते हैं। परमपिता–परमात्मा ही पतित-पावन है, कहते हैं– अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो, तो यह बात कोई ने नहीं समझाया। ड्रामा में देरी है इसलिए मुख्य समझानी निकलती ही नहीं। तो उनकी बुद्धि में बैठता ही नहीं। शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो। तो पावन बन इस विनाश के बाद पावन दुनिया में जावेंगे। नास्तिक लोग बाप को जानते ही नहीं। जो बाप को, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते, उनको नास्तिक कहा जाता है। आस्तिक बाप को जानते हैं। मुख्य बात ज़रूर समझानी चाहिए। वह भूल जाते हैं। अन्दर घुसते हैं तो बुद्धि में हम डिप्टी प्राइम-मिनिस्टर हूँ। शास्त्र भी बुद्धि में रहती है। यहाँ तो बच्चों को पहला सबक दिया जाता है– अपन को आत्मा समझो। यही ख्याल रखो अब हम जाते हैं। नंगे आए थे, नंगे जाना है। सतो॰ बनने लिए बाप को याद करना है। यह मूल मंत्र कोई देते नहीं। बाबा की मुरली तो बच्चे सुनेंगे। बाप का परिचय कोई ने दिया नहीं। बैज पर बोलो। यह बाबा। यह दादा। यह तो बच्चा ठहरा ना। तुम आपस में भाई-2 हो। फिर प्रजापिता के बच्चे होने कारण भाई-बहन ठहरे। फिर सतयुग में दैवी सम्बन्ध होता है। कलियुग में फिर ढेर संबंध हो जाते हैं। बहुत वृद्धि को पाते हैं। पौत्रे-परपौत्रे कितने हो जाते हैं। सतयुग में तो इतने नहीं होते, और वहाँ पवित्र भी होते हैं। पहले तो निश्चय चाहिए, भगवान पढ़ाते हैं। माया भी बड़ी दुस्तर है। 5 विकारों पर तुम जीत पाते हो। जैसे बाप सर्वशक्तिवान है, तो रावण भी सर्वशक्तिवान है। अभी रावण की राजधानी विनाश होती है। यह पुरानी दुनिया सारी खाक हो जानी है। नई दुनिया बनेगी। वेश्यालय है रावण राज्य। शिवालय है रामराज्य। तुम जानते हो हम फिर से स्वर्गवासी बनते हैं। विनाश सामने खड़ा है। एक तरफ शूद्रवंशी, दूसरे तरफ ब्राह्मणवंशी। ब्र॰वि॰शं॰ शिवबाबा की रचना हैं। वर्सा बाप देते हैं। भाई-2 दे न सके। इस समय दुनिया में कितने भाई हैं? सभी का हक है मुक्ति-जीवनमुक्ति पाना। तुम जाते हो जीवनमुक्ति में, बाकी सभी मुक्ति में। यह पढ़ाई तो बहुत-2 सहज है। कोई तकलीफ की बात नहीं। आत्मा का स्वधर्म है शांत। घर है परमधाम। देह यहाँ रहती है। अभी वापस घर जाना है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो पाप कटे। गीता है सर्वशास्त्रमई शिरोमणि शास्त्र। बाप भी यहाँ आकर सर्व की सद्गति करते हैं। तो सबसे बड़ा तीर्थ आबू है। तुम्हारा आवाज़ ज़ोर से निकलेगा। सभी का यह तीर्थ स्थान है। बाप आकर सभी की सद्गति करते हैं। आदिदेव-आदिदेवी का मंदिर भी है। स्वर्ग का भी मंदिर है। नीचे तपस्या करते हैं। यह यादगार बहुत अच्छा है। सर्व की सद्गति दाता बाप का मंदिर है। नाम भी है दिलवाला मंदिर। सभी की दिल लेने वाला अर्थात सर्व की सद्गति करने वाला। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का गुडनाइट और नमस्ते।